बाल - विवाह

नन्ही सी इन आँखों में एक सपना था,
बाल विवाह की रीत में रहा ना कोई अपना था।

ना बाबा की गोद थी, ना माँ की लोरियाँ,
रह गई थी तो बस गैरों की बोलियाँ।

नन्ही सी इन हाथों में होने खेल-खिलौने थे,
बाल विवाह की रीत ने थमा दिए भगोने हैं।

सोचा था पढ़कर कुछ बन जाएँगे,
कच्ची सी इस उम्र में कैसे रिश्ते निभाएँगे।

नाज ना नखरे ना है अब वो इतराना,
बस रह गया है ससुराल में खाना बनाना।

बाल विवाह के नाम पे हो रहा अभिशाप है,
दो मासूमों के जीवन का हो रहा सर्वनाश है।

— Prarthna Agrawal
VII - D